B.A. Part - II
Philosophy Paper - IV

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Descartes Proofs for the existence of God

Descartes (देकार्त) द्वारा ईश्वर के अस्तित्व के सम्बन्ध में हमें विभिन्न तरह की युक्ति देखने को मिलती है, परन्तु उनमें से तात्विक युक्ति का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि इसमें भावना और विचार के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने का प्रयास किया गया है। देकार्त के अनुसार मन में तीन प्रकार का प्रत्यय पाया जाता है,

(i) Innate Ideas (जन्मजात प्रत्यय)
(ii) Adventitious Ideas (स्वरचित प्रत्यय)
(iii) Imaginative Ideas (कल्पना प्रसूत प्रत्यय)

इन तीनों में से आत्मजात प्रत्यय मूल है और आत्मजात प्रत्ययों में एक ऐसी भावना होती है जिसका सम्बन्ध ऐसी सत्ता से है जो सभी का आधार है, एवं सर्वव्यापी तथा सभी अच्छाईयों का धाम है। आत्मजात प्रत्यय का सम्बन्ध ऐसी सत्ता से है जो शाश्वत, पूर्ण, सर्वज्ञानी, सर्वव्यापक है और सभी सत्यता और अच्छाई का धाम है जिसे ईश्वर की संज्ञा दी जाती है।

परन्तु देकार्त के सामने समस्या यही है कि इस तरह की भावना आयी कैसे और इसकी व्याख्या किस तरह की जाय। देकार्त का विचार है कि मैं अपूर्ण हूँ इसलिए इस तरह की भावना की कल्पना नहीं कर सकते, क्योंकि अपूर्ण मनुष्य पूर्ण ईश्वर के प्रत्यय का निर्माण नहीं कर सकता। अपूर्ण से पूर्ण की उत्पत्ति नहीं हो सकती। पूर्ण से ही पूर्ण आ सकता है अतः इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए देकार्त ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने का प्रयास किया है। उनका विचार है कि ईश्वर ने ही अपने अनुरूप मानव

Scanned with CamScanner

मन में प्रत्यय को संजोये रखा है, ईश्वर ने अपनी ही तरह सृष्टि की है। यही मूल कारण है कि ईश्वर का प्रत्यय प्रत्येक मनुष्य के मन में जन्मजात रूप में वर्तमान रहता है।

देकार्त ने ईश्वरीय सत्ता को अभावात्मक रूप से भी सिद्ध करने का प्रयास किया है। देकार्त का कथन है कि अगर जन-साधारण यह कहें कि ईश्वर का प्रत्यय Positive सकारात्मक प्रत्यय नहीं है, बल्कि अभावात्मक है, तो इससे कोई हानि नहीं क्योंकि Negative करने से ही उसकी सत्ता की सिद्धि हो जाती है। इसके साथ-ही-साथ ईश्वर के अस्तित्व के सम्बन्ध में अन्य उक्तियों का उसने उल्लेख किया है जो निम्न है—

(1) कारण सम्बन्धी प्रमाण

देकार्त का कथन है कि प्रत्येक वस्तु का कारण होता है अतः मनुष्य का भी कोई-न-कोई कारण अवश्य होगा। ~~क्योंकि~~ किन्तु यहाँ प्रश्न होता है कि मुझे किसने बनाया है। आप ~~कह~~ कह सकते हैं कि माता-पिता के द्वारा मेरा निर्माण हुआ है। परन्तु प्रश्न का अन्त नहीं होगा, क्योंकि पुनः प्रश्न है कि उन्हें किसने बनाया पुनः हम ~~कह~~ कह सकते हैं कि उनके माता-पिता ने ~~ही~~न किन्तु पुनः यह प्रश्न उठता है कि उन्हें किसने बनाया ? अतः इस प्रश्न का अन्त नहीं होगा। पुनः यदि हम यह कहें कि हमने या मनुष्य ने स्वयं अपने आप को बनाया तो यह जवाब सटीक नहीं है क्योंकि अगर वे या हम अपना स्वयं कारण थे तो उन्हें पूर्ण होना चाहिए था, परन्तु वे पूर्ण नहीं थे, क्योंकि उनका भी कारण उनके माता-पिता था, इस तरह इस प्रश्न का अन्त नहीं होगा और इससे 'अनावस्था' दोष का शिकार होना पड़ता है। देकार्त का कथन है कि इस दोष का तो अन्त होना ही है, इनके अनुसार जो माता-पिता रह गये वही हमारे कारण हैं। वह अन्तिम कारण माता-पिता दूसरा नहीं बल्कि ईश्वर ही हैं जो सर्वव्यापी एवं स्वयंभू है।

पुनः ईश्वर की धारणा को ~~देकार्त~~

स्पष्ट करते हुए देकार्त ने विभिन्न धारणाओं का सहारा लिया है, वे विभिन्न धारणाओं को सत्य अथवा असत्य की की कसौटी के रूप में स्वीकार करते हुए मानते हैं कि जो भी धारणा पूर्णतया स्पष्ट और अन्य धारणाओं से विशिष्ट है, उसे सत्य माना जाना चाहिए। ईश्वर की धारणा इस कसौटी पर खरी उतरती है अतः ईश्वर का अस्तित्व है। मनुष्य के मन में यह स्पष्ट और भिन्न धारणा ईश्वर उत्पन्न करता है और मनुष्य उसमें मनचाहा परिवर्तन नहीं कर सकता है। ईश्वर पूर्ण है इसलिए वह मनुष्य के मन में भ्रमपूर्ण धारणाएँ उत्पन्न करके धोखा नहीं दे सकता। पुनः स्पष्ट है कि जब ईश्वर ने मनुष्य के मन में एक नित्य, शाश्वत, पूर्ण सर्वज्ञ, सर्व व्यापी असीम सत्ता की धारणा उत्पन्न की है तो यह सत्ता अवश्य होगी ही। ईश्वर कृपालु है और इसलिए यह निश्चित है कि वह हमारे मन में भ्रमपूर्ण विचार नहीं रखेगा, क्योंकि यदि ऐसा न हो तो फिर ईश्वर को धोखेबाज मानना पड़ेगा जो कि वह नहीं हो सकता।

Ontological argument — इस प्रमाण में Descartes ने सिद्ध किया है कि भावना और तदनुरूप अस्तित्व में अवियोज्य सम्बन्ध है प्रमाण के सार को इस प्रकार दिखाया जा सकता है

हमारे अन्दर पूर्ण सत्ता की भावना है और फिर तो इसके अनुरूप पूर्ण सत्ता का अस्तित्व भी अवश्य होना चाहिए। यदि पूर्ण सत्ता की भावना काल्पनिक रचना मात्र हो, अर्थात उसके अनुरूप कोई वास्तविक सत्ता नहीं हो तो उस काल्पनिक भावना को पूर्ण सत्ता की भावना नहीं कहा जा सकता। अनुरूप वास्तविक सत्ता के अभाव का मतलब ही हो जाता है पूर्णता की कमी। पूर्णता और अभाव दोनों एक साथ नहीं हो सकते। इस तरह की पूर्ण सत्ता की भावना दो तरह की हो सकती है (1) उस पूर्ण सत्ता की भावना जिसके अनुरूप वास्तव में पूर्ण सत्ता हो। (2) उस पूर्ण सत्ता की भावना जिसके अनुरूप वास्तव में कोई सत्ता है नहीं। देकार्त का कहना है कि वही पूर्ण सत्ता की भावना वस्तुतः पूर्ण सत्ता की भावना है, जिसके

Scanned with CamScanner

अनुरूप सत्ता का भाव भी है, अर्थात् जिसका अस्तित्व है। जिसके अनुरूप सत्ता का भाव नहीं है या अस्तित्व नहीं है अर्थात् जो काल्पनिक रचनामात्र है वह पूर्ण सत्ता की भावना नहीं है क्योंकि वास्तविक सत्ता पूर्ण होगी है। पूर्ण सत्ता को अवास्तविक समझना उसे अस्तित्वहीन मानना आत्म विरोधी के सिवा और कुछ नहीं है। देकार्त्त ने ज्यामिति का उदाहरण देते हुए इसे स्पष्ट किया है कि यदि कोई त्रिभुज है तो मानना ही पड़ेगा कि उसके तीनों कोणों का योग दो समकोण के बराबर होगा। ऐसा होना अनिवार्य है। किसी आधार वाक्य को सत्य मानकर नियमानुकूल उससे व्युत्पन्न निष्कर्ष को असत्य करार नहीं किया जा सकता। इसरे शब्दों में यदि हम कोण, त्रिभुज और ज्यामिति की परिभाषा को स्वीकार कर लें तो हमें यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि त्रिभुज के तीनों कोणों का योग दो समकोण के बराबर होगा। ठीक उसी प्रकार पूर्ण सत्ता की भावना अगर हम स्वीकार कर लेते हैं तो हमें अवश्य ही स्वीकार करना पड़ेगा कि पूर्ण सत्ता वास्तविक है उसका अस्तित्व है, इसलिए पूर्ण सत्ता का अस्तित्व इसकी भावना से अनिवार्य रूप से सिद्ध होती है।

यहाँ हम पाते हैं कि देकार्त्त का तात्विक युक्ति अन्सेलम के तात्विक युक्ति से मिलता जुलता है। Anselm ने भी तात्विक युक्ति के आधार पर ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध करने का प्रयास किया था। उसके अनुसार ईश्वर सर्वोपरी प्रत्यय है। सर्वोपरी प्रत्यय दो प्रकार के हो सकते हैं। एक तो वह जो केवल विचार में सर्वोपरी हो और दूसरा वह जो विचार और वास्तविकता यानी अस्तित्व दोनों में सर्वोपरी हो। वास्तविक रूप से वही प्रत्यय सर्वोपरी कहा जा सकता जो दोनों में सर्वोपरी हो। ईश्वर सर्वोपरी प्रत्यय है, इसलिए कि वह विचार और अस्तित्व दोनों में सर्वोपरी है।

परन्तु वास्तव में देखा जाय तो Anselm (अन्सेलम) और देकार्त्त की तात्विक युक्ति में भेद है। अन्सेलम की तात्विक युक्ति विशेष रूप से मनोवैज्ञानिक है क्योंकि उनकी युक्ति में ईश्वर की

Scanned with CamScanner

सत्ता को मानवीय भावना के आधार पर नहीं परन्तु ईश्वर भावना के आधार पर सिद्ध किया गया है। परन्तु देकार्त का कहना है कि इनकी इनकी युक्ति के अनुसार ईश्वर के भाव या अस्तित्व पर ईश्वर की भावना निर्भर करती है, अर्थात् ईश्वर इसलिए नहीं है कि हमें उसकी भावना है परन्तु हमें उसकी भावना इसलिए है कि वह वास्तविक सत्ता है। देकार्त की ईश्वर सम्बन्धी युक्ति इस प्रकार है "जिस किसी वस्तु के तत्व या सार तथा रूप (Form) को हम स्पष्टतया तथा परिस्पष्टतया देखते हैं कि वह उस वस्तु में है तो उस वस्तु के प्रति उस तत्व तथा परिस्पष्ट रूप का विधान कर सकते हैं।" अब हम स्पष्ट तथा परिस्पष्ट रूप से देखते हैं कि वास्तविकता ईश्वर के रूप में निहित है इसलिए उचित रीति से हम ईश्वर के अस्तित्व को मान सकते हैं।

आलोचना — देकार्त के तात्विक युक्ति की आलोचना करते हुए Kant महोदय का कहना है कि ईश्वर के प्रत्यय होने से ही ईश्वर की सत्ता नहीं सिद्ध हो जाती। अगर प्रत्यय मात्र किसी वस्तु का अस्तित्व होता है तो क्यों नहीं जेब में 500 रु० के प्रत्यय बनाने से पाँच सौ रुपये का अस्तित्व हो जाता है? यदि प्रत्यय के अनुरूप वास्तविकता होती है तो लंगड़े भी पर्वत पर चढ़ जाते। अतः व्यवहारिक जीवन में हमें ऐसा देखने को नहीं मिलता। अतः प्रत्ययमात्र से ही ईश्वर की सत्ता की सिद्धि नहीं हो पाती। ~~Kant~~ Kant की आलोचना का ~~कि~~ मैं किर्केगार्ड ने भी समर्थन किया है और कहा है कि यदि कोई नंगा व्यक्ति अपने को सुसज्जित सोच लेता है तो इससे वह वस्तुतः वस्त्रों से सुसज्जित नहीं हो जाता। इस तरह ईश्वर की भावना से ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध नहीं हो पाता।

हालांकि Kant की आलोचना के प्रत्यालोचना स्वरूप कहा गया है कि ईश्वर का प्रत्यय एक अनूठा प्रत्यय है। यह एक असाधारण प्रत्यय है जिसके अन्तर्गत इसका अनिवार्य अस्तित्व निहित है। अतः ईश्वर के प्रत्यय

को अन्य साधारण प्रत्यय से मिलान करना तर्कसंगत नहीं है।

गसेन्डी का दूसरा आक्षेप यह है कि वास्तविकता और अनिवार्यता का आपस में सम्बन्ध नहीं हो सकता। जो वस्तु वास्तविक है उसे अनिवार्य नहीं कह सकते और जो वस्तु अनिवार्य है उसे आवश्यक रूप से वास्तविक नहीं कहा जा सकता। इन्द्रियानुभव की जानेवाली वास्तविक वस्तु को अनिवार्य नहीं सिद्ध कर सकते। जो विचार में है उसे वास्तविक नहीं भी कहा जा सकता है जैसे त्रिभुज के तीनों कोणों का योग दो समकोण के बराबर होता है यह विचार में सही है परन्तु वास्तविक रूप से दो समकोण के बराबर नहीं होता। इसी तरह विन्दु उसे कहते हैं जो स्थान नहीं छेकता है परन्तु बिना स्थान छेके कोई विन्दु की कल्पना नहीं की जा सकती - न उसे इन्द्रियानुभव से जान भी सकते हैं।

गैनिलो का कहना है कि अस्तित्व वास्तविक गुण है तो आकस्मिक ही हो सकता है, अनिवार्य नहीं। देकार्तीय तात्विक युक्ति की आलोचना करते हुए कैटीरस महोदय ने यह बतलाया है कि सर्वोच्च पूर्णता से अनिवार्य अस्तित्व परिलक्षित होता है, तो इससे कोई वास्तविक सत्ता सिद्ध नहीं होती। क्योंकि सर्वोच्च पूर्णता से अनिवार्य अस्तित्व अन्तर्ध्वनित होता है और यह केवल विचारों में ही सत्य होगा। इससे वास्तविक सत्ता प्रमाणित नहीं होती।

Wright का कहना है कि धर्म-दर्शन का अध्ययन करने से यह पता चलता है कि देकार्त का यह कथन सत्य नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति में ईश्वर के सम्बन्ध में एक जन्मजात प्रत्यय वर्तमान रहता है। आदिकाल में लोगों के अन्दर इस तरह का प्रत्यय नहीं पाया जाता था। वे तो वृक्ष, नदी, सूर्य, उषा आदि की पूजा किया करते थे, उन्हें ही ईश्वर माना जाता था। आज भी अफ्रिका की जंगली जातियाँ ईश्वर के सम्बन्ध में अनभिज्ञ हैं। इसलिए

Scanned with CamScanner

देकार्त द्वारा ईश्वर के प्रत्यय को जन्मजात बतलाना कदापि युक्तिसंगत नहीं कहा जा सकता।

दूसरी बात यह है कि देकार्त ~~द्वारा~~ बुद्धि द्वारा ईश्वर की सत्ता सिद्ध करना चाहा है परन्तु ईश्वर आस्था का विषय है इसके साथ ही देकार्त अस्तित्व को ईश्वर का गुण मानते हैं, जिस तरह ईश्वर में अन्य सारे गुण हैं उसी तरह अस्तित्व एक गुण है परन्तु यह उचित नहीं है, अस्तित्व गुण नहीं गुण का आधार है।

किन्तु ध्यान से देखने पर देकार्त का ईश्वर केन्द्रीत दर्शन मध्ययुगीन दर्शन से भिन्न है। मध्ययुग में ईश्वर धर्म-विश्वास का पात्र था, परन्तु देकार्तीय ईश्वर तत्वमीमांसा की सत्ता है। देकार्तीय ईश्वर की न तो पूजा होती है और न ही उसका कोई पुजारी है। देकार्त की विचार परम्परा के अनुसार विश्व लौकिक रचना है जिन्हें मानव अपनी बुद्धि से जान सकता है अतः देकार्त ने ईश्वर की सत्यनिष्ठा से मानव ज्ञान क्षमता का बोध कराया है।

Scanned with CamScanner